

मीलादुन्नबी का स्मरणोत्सव मनाने का हुकम

﴿ حکم الاحتفال بذكرى المولد النبوي ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندی]

शैखा डॉक्टर सालेह बिन फौज़ान अल-फौज़ान

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ حكم الاحتفال بذكرى المولد النبوي ﴾

« باللغة الهندية »

الشيخ الدكتور صالح بن فوزان الفوزان

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

Islamhouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्हमानिर्हीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन का यादगार समारोह आयोजित करने का हुकम

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए योग्य है, तथा हमारे ईशूत मुहम्मद, आप के परिवार और सभी साथियों पर अल्लाह तआला की दया और शांति अवतरित हो, हम्द व सलात के बाद :

पवित्र कुरआन और हदीस शरीफ में अल्लाह और उस के पैगंबर की शरीअत का पालन करने का आदेश और धर्म में नई चीजों (नावाचार) के अविष्कार करने का जो निषेद्ध वर्णित हुआ है वह किसी पर रहस्य नहीं है, अल्लाह तआला का फरमान है : “कह दीजिए अगर तुम अल्लाह तआला

से महबूत रखते हो तो मेरी पैरवी (अनुसरण) करो, स्वयं अल्लाह तआला तुम से महबूत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और अल्लाह तआला बड़ा माफ करने वाला और बहुत मेहरबान (दयालु) है।” (सूरत आल इम्रान: 31)

तथा अल्लाह तआला का फरमान है : “जो (धर्म शास्त्र) तुम्हारे पालनहार की तरफ से तुम्हारी ओर अवतरित की गई है उस की पैरवी करो, और उस के सिवाय दूसरे औलिया की पैरवी न करो, तुम लोग बहुत कम नसीहत हासिल करते हो।” (सूरतुल आराफ : 3)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया : “और यही धर्म मेरा मार्ग है जो सीधा है, अतः इसी मार्ग पर चलो, और दूसरी पगडंडियों पर न चलो कि वे तुम्हें अल्लाह के मार्ग से अलग कर दें गी, इसी का अल्लाह तआला ने तुम को आदेश दिया है तकि तुम परहेज़गार (संयमी, ईश-भय रखने वाले) बनो।” (सूरतुल अंआम: 153)

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “सब से सच्ची बात अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की किताब है, और सब से बेहतरीन तरीका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीका है, और सब से बुरी बात धर्म में नयी ईजाद कर ली गई चीज़ें हैं।”

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “जिस ने हमारी इस शरीअत में कोई ऐसी चीज़ ईजाद की जिस का इस से कोई संबंध नहीं है तो उसे रद्द (अस्वीकृत) कर दिया जायेगा।” इसे बुखारी (हदीस संख्या : 2697) और मुस्लिम (हदीस संख्या : 1718) ने रिवायत किया है। और मुस्लिम की एक अन्य रिवायत में है कि : “जिस ने कोई ऐसा काम किया जो हमारी शरीअत के अनुसार नहीं है तो उसे रद्द (अस्वीकृत) कर दिया जायेगा।”

लोगों ने जो घृणित बिद्अतें (निंदित नवाचार) ईजाद कर लिये हैं उन में से एक रबीउल अव्वल के महीने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिवस का यादगार (स्मरण उत्सव) मनाना है, और वे लोग इस यादगार समारोह को विभिन्न प्रकार से आयोजित करते हैं :

– उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस दिन मात्र एकत्र होकर जन्म-कथा पढ़ते हैं, या उस में भाषण दिये जाते हैं और इस अवसर से संबंधित (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सराहना में कवितायें “ना’त”) क़सीदे पेश किए जाते हैं।

– कुछ लोग खाना और मिठाई आदि बनाते हैं, और उन्हें उपस्थित लोगों को पेश करते हैं।

– उन में से कुछ लोग इस समारोह को मस्जिदों में आयोजित करते हैं और कुछ लोग इस महफिल को घरों में सजाते हैं।

– कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उपर्युक्त चीज़ों पर बस नहीं करते हैं, बल्कि उन का यह उत्सव हराम और अवैध चीज़ों पर आधारित होता है, जैसे कि मर्दों और औरतों का मिश्रण (इख़्तिलात), नाच, गाना, या शिर्क वाले काम जैसेकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फर्याद चाहना, आप को पुकारना, तथा आप के द्वारा दुश्मनों पर विजय मांगना वगैरह।

इस में कोई सन्देह नहीं कि यह अपने सभी प्रकार और विभिन्न रूपों, तथा इस के मनाने वालों के विभिन्न उद्देशों (मक़ासिद) के साथ एक हराम (वर्जित) बिद्अत (नवाचार) है जिसे सर्वश्रेष्ठ शताब्दियों के (एक लम्बे समय के) बाद फातिमी शीयों ने मुसलमानों के धर्म का विनाश करने के लिए अविष्कार किया है। और इन के बाद इस (ईद मीलादुन्नबी समारोह) का सब से पहला प्रदर्शन छठी या सातवीं शताब्दी हिजरी में इरबल नामी

नगर के राजा मुज़फ़्फर अबू सईद कौकबूरी ने किया है, जैसाकि इतिहासकारों जैसे कि इब्ने खलककान वगैरा ने उल्लेख किया है।

अबू शामा कहते हैं कि : मौसिल नामी नगर में जिस ने सब से पहले इस बिद्अत को किया वह एक सुप्रसिद्ध सदाचारी शैख उमर बिन मुहम्मद मुल्ला है, और इरबल के शासक और अन्य लोगों ने इस बारे में उसी का अनुसरण किया है।

हाफिज़ इब्ने कसीर अपनी पुस्तक “अल बिदाया वन्निहाया” (13/137) में अबू सईद कौकबूरी की जीवनी में कहते हैं कि : “वह रबीउल अव्वल में मीलाद शरीफ करता था और इस अवसर पर एक विशाल समारोह आयोजित करता था . . . यहाँ तक कि उन्हीं ने आगे फरमाया : अल बस्त ने कहा : राजा मुज़फ़्फर के मीलाद के अवसर पर आयोजित होने वाले किसी समारोह में उपस्थित होने वाले किसी आदमी ने वर्णन किया कि वह इस दावत में पाँच हज़ार भूने हुए बकरे, दस हज़ार मुर्गियाँ, एक लाख बर्तन और तीस हज़ार ट्रे मिठाईयाँ प्रस्तुत करता था . . . यहाँ तक कि आगे कहा कि : तथा वह सूफियों के लिए जुहर से लेकर फज़ तक महफिले सिमाअ् (गाने) का प्रतिबंध करता था और खुद भी उन के साथ नाचता था।

तथा इब्ने खलककान अपनी किताब “वफयातुल आयान” (3/74) में कहते हैं : जब सफर के महीने का आरंभ होता था, तो वे लोग उन गुंबदों को विभिन्न प्रकार के उत्कृष्ट और सौन्दर्य प्रदर्शित श्रृंगार के द्वारा सजाते थे, और हर गुंबद में गायकों का एक समूह, और अध्यात्मिक लोगों तथा हर्ष प्रधान कलाकारों का एक समूह बैठता था, और उन वर्गों (गुंबदों के वर्गों) में से किसी वर्ग को उस में किसी समूह को बैठाये बिना नहीं छोड़ते थे।

उस अवधि के दौरान लोगों की जीविका (रोज़गार) निरस्त हो जाती थी, मनोरंजन करने और घूमने फिरने के सिवाय उन का कोई काम नहीं होता था ...” यहाँ तक कि उन्होंने ने आगे कहा कि : “जब मीलाद में दो दिन रह जाता (अर्थात मीलाद से दो दिन पहले) तो ऊँटों, गायों और बकरियों की इतनी अधिक संख्या बाहर निकालता जो वर्णन (गणना) से बाहर है, और उन्हें उस के पास जो भी ढोल, संगीत और मनोरंजन के यंत्र होते थे उन के साथ खाना करता यहाँ तक कि उन्हें मैदान में लेकर आता ...” यहाँ तक कि उन्होंने ने आगे फरमाया : “जब मीलाद की रात होती तो वह क़िला में मग़िब की नमाज़ पढ़ने के बाद महफ़िले सिमाअ (नाच गान) का आयोजन करता था।”

तो यह रही पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्मदिन के यादगार के अवसर पर समारोह को आयोजित करने का आरंभ, जो कि बहुत बाद में उत्पन्न हुआ है और अपने साथ लहव व लइब (खेल तमाशा) अपव्यय (फुज़ूल खर्ची) और एक ऐसी बिद्अत (नवाचार) के पीछे धन और समय को नष्ट करने के साथ (उत्पन्न हुआ) है जिस की अल्लाह तआला ने कोई सनद नहीं उतारी है।

एक मुसलमान के लिए योग्य यह है कि वह सुन्नतों को जीवित करे, बिद्अतों को मिटाये और किसी काम को करने के लिए क़दम न उठाये यहाँ तक कि उस के बारे में अल्लाह का हुक्म जान ले।

मीलादुन्नबी का यादगार समारोह आयोजित करने का हुक्म :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन के अवसर पर समारोह आयोजित करना कई कारणों के आधार पर निषिद्ध और खंडित (अस्वीकृत) है :

पहला : यह न तो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से प्रमाणित है और न ही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खुलफा रज़ियल्लाहु अन्हुम की सुन्नत (तरीके) से प्रमाणित है। और जो चीज़ इस तरह की हो वह निषिद्ध बिदअतों में से है, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : “तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत याफ़ता (पथ प्रदर्शित) खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ो, उसे दृढ़ता से थाम लो और उसे दाँतों से जकड़ लो। और धर्म में नयी ईजाद कर ली गयी चीज़ों (नवाचार) से बचो, क्योंकि धर्म में हर नई ईजाद कर ली गई चीज़ बिदअत है, और हर बिदअत गुमराही (पथ भ्रष्टता) है।” (मुस्नद अहमद 4 / 126, तिर्मिज़ी हदीस संख्या : 2676).

और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन का जश्न मनाना एक नई अविष्कार कर ली गई चीज़ (नवाचार) है जिसे फातिमी शीयों ने इस्लाम की प्रारंभिक सर्वश्रेष्ठ शताब्दियों के बाद मुसलमानों के धर्म को भ्रष्ट करने के लिए अविष्कार किया है। और जिस व्यक्ति ने अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए कोई ऐसा काम किया जिसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं किया है और न ही उस के करने का आदेश दिया है, और न ही उसे आप के बाद आप के खुलफा (उत्तराधिकारियों) ने किया है, तो उस का यह काम (कृत्य) पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बात से आरोपित करने पर आधारित है कि आप ने लोगों के लिए उन के धर्म को स्पष्ट रूप से बयान नहीं किया है, तथा अल्लाह तआला के इस कथन को झुठलाने को शामिल है कि : “आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को मुकम्मल कर दिया।” (सूरतुल-माईदा: 3) क्योंकि वह एक ऐसी वृद्धि लेकर आया है जिसे

वह धर्म से गुमान करता है हालांकि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे लेकर नहीं आये हैं।

दूसरा : पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन के यादगार में समारोह आयोजित करने में ईसाईयों की छवि अपनाना पाया जाता है, क्योंकि वे लोग भी मसीह अलैहिस्सलाम के जन्म दिन के यादगार का जश्न मनाते हैं, और उन की छवि अपनाना (नकल करना) सख्त हराम है, चुनाँचि हदीस में कुपफार की छवि अनपाने (नकल करने) से रोका गया है और उन का विरोध करने का आदेश दिया गया है, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **“जिस ने किसी कौम (जाति) की छवि अपनायी वह उन्हीं में से है।”** (मुस्नद अहमद 2/50, अबू दाऊद 4/314) तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **“मुशिरकों का विरोध करो।”** (सहीह मुस्लिम 1/222 हदीस संख्या : 259), विशेष रूप से उन चीजों में जो उन के धर्म के प्रतीकों में से है।

तीसरा : रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन का यादगार उत्सव आयोजित करना बिद्अत (नवाचार) और ईसाईयों की समरूपता होने के साथ साथ, हालाँकि इन में से हर एक हराम (वर्जित) है, यह आप का सम्मान करने में गुलू और मुबालग़ा (अतिशयोक्ति) है यहाँ तक कि वह अल्लाह तआला के सिवाय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुकारने और आप से फर्याद चाहने तक पहुँचा देता है, जैसाकि आज मीलादुन्नबी की बिदअत को मनाने वाले बहुत से लोगों की वस्तुस्थिति यही है कि वे अल्लाह के सिवाय रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुकारते, और आप से मदद मांगते हैं, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सराहना में शिर्क

पर आधारित क़सीदे (कवितायें) जैसे कि क़सीदतुल बुर्दा इत्यादि पढ़ते हैं, जबकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी सराहना और प्रशंसा में अतिशयोक्ति (गुलू) करने से मना फरमाया है, आप ने फरमाया : **“मेरी इस प्रकार बढ़ा चढ़ा कर प्रशंसा न करो जैसाकि ईसाईयों ने मर्यम के बेटे –ईसा अलैहिस्सलाम– के साथ किया कि उन की प्रशंसा में सीमा लांघ गए, मैं उस का बन्दा (उपासक और दास) हूँ। अतः तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल (ईशदूत, पैग़म्बर) कहो।”** (सहीह बुखारी 4/142 हदीस संख्या : 3445, फत्हुल बारी 6/551)

अर्थात् मेरी स्तुति, तारीफ और मेरे सम्मान में सीमा से आगे न बढ़ो जिस प्रकार कि ईसाई लोग मसीह अलैहिस्सलाम की प्रशंसा और उन के सम्मान में सीमा को लांघ गये यहाँ तक कि अल्लाह के सिवाय उनकी पूजा करने लगे, जबकि अल्लाह तआला ने अपने इस कथन के द्वारा उन्हें इस चीज़ से मना कर दिया था : **“ऐ अहले किताब ! अपने धर्म में गुलू (अतिशयोक्ति) न करो, और अल्लाह के ऊपर सच ही बोलो, बेशक मर्यम के बेटे ईसा मसीह केवल अल्लाह के पैग़ंबर और कलिमा हैं जिसे मर्यम की तरफ डाल दिया और उस की तरफ से रूढ़ हैं।”** (सूरतुन्निसा : 171)

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें गुलू करने से रोका है इस डर से कि कहीं हमें भी वही चीज़ न पहुँच जाये जो उन्हें पहुँची थी, आप ने फरमाया : **“तुम गुलू करने से बचो, क्योंकि गुलू ने तुम से पहले के लोगों को तबाह कर दिया।”** इसे नसाई (5/268) ने रिवायत किया है, और अल्बानी ने सहीह सुनन नसाई (हदीस संख्या : 2863) में इसे सहीह कहा है।

चौथा : पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन की बिद्अत को मनाना दूसरी बिद्अतों का तथा सुन्नत की उपेक्षा करके उन में व्यस्त होने का द्वार खोलता है, इसीलिए आप देखेंगे कि बिद्अती लोग बिद्अतों को मनाने में सक्रिय होते हैं, और सुन्नतों से आलस्य करते हैं और उन से घृणा (नफरत) करते हैं और सुन्नत के अनुयायियों से दुश्मनी करते हैं, यहाँ तक कि उन का समूचित धर्म अविष्कारित यादगारें और सालगिरहें मनाना बन कर रह गया है, और वे कई समूहों में विभाजित हो गये हैं और हर समूह (फिर्की) अपने गुरुवों (इमामों) के जन्म दिनों को मनाता है, जैसे कि : अल बदवी, इब्ने अरबी, अद्सूकी, और अश्शाज़ली का जन्मदिन, इस तरह वे एक जन्म दिन का जश्न मनाने से फारिग होते ही दूसरे जन्म दिन का उत्सव मनाने में लग जाते हैं, और इस का (दुष्ट) परिणाम यह सामने आया कि इन मृत लोगों और इन के अलाव अन्य लोगों के बारे में गुलू (अतिशयोक्ति) किया जाने लगा और अल्लाह के सिवाय इन लोगों को पुकारा जाने लगा, और उन का यह विश्वास और अकीदा बन गया कि वे लोग लाभ और हानि पहुँचाते हैं यहाँ तक ये लोग अल्लाह तआला के दीन से निकल गये और उन जाहिलियत के लोगों के धर्म की तरफ पलट गये जिन के बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया है : **“और ये लोग अल्लाह के सिवाय ऐसे लोगों की पूजा करते हैं जो न इन्हें हानि पहुँचा सकते हैं और न ही इन्हें लाभ पहुँचा सकते हैं और कहते हैं कि ये लोग अल्लाह के पास हमारे सिफारिशी हैं।”** (सूरतु यूनुस : 18)

तथा अल्लाह तआला ने एक दूसरे स्थान पर फरमाया : **“और जिन लोगों ने उस (अल्लाह) के सिवाय औलिया बना रखे हैं (और कहते हैं) कि हम उन की इबादत केवल इसलिए करते हैं कि ये (बुजुर्ग) हम को अल्लाह के करीब पहुँचा दें।”** (सूरतुज्जुमर :3)

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन का यादगार समारोह आयोजित करने वालों के सन्देहों का निवारण :

इस बिद्अत को मनाने के समर्थक लोग ऐसे सन्देहों का सहारा लेते हैं जो मकड़ी के जाले से भी अधिक कमजोर हैं, इन सन्देहों को निम्न बिन्दुओं में समेटा जा सकता है :

1. उन का यह दावा करना कि इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सम्मान है :

इस के उत्तर में हम कहेंगे कि : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर और सम्मान (ता'जीम) आप की ताबेदरी (अनुसरण), आप के आदेश का पालन और आप की निषिध की हुई चीजों से बचाव करने और अल्लाह के वास्ते आप से महब्बत करने में है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सम्मान बिद्आत व खुराफात (नवाचारों और मिथ्याओं) तथा आप की शरीअत का उल्लंघन और अवहेलना करने के द्वारा नहीं होता, और आप के जन्म का यादगार उत्सव मनाना इसी घृणित और अवैध प्रकार से संबंधित है; क्योंकि यह अवज्ञा और अवहेलना (नाफरमानी) है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सब से अधिक और टूट कर महब्बत करने वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं, जैसाकि उर्वा बिन मस्ऊद ने कुरैश से कहा था : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की क़सम मैं किस्रा और कैसर (फारिस एवं रूम के बादशाह) तथा अन्य बादशाहों के दरबारों में गया हूँ, पर मैं ने किसी बादशाह को नहीं देखा कि उस के मानने वाले उस की इस तरह ता'जीम और सम्मान करते हों जिस तरह मुहम्मद के साथी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ता'जीम और सम्मान करते

हैं, अल्लाह की क़सम उन का सम्मान करते हुए वे लोग उन की तरफ निगाह भर कर देखते भी नहीं।” (सहीह बुखारी 3/178 हदीस संख्या : 2731, 2732, फत्हुल बारी 5/388)

लेकिन इस सम्मान और आदर के बावजूद उन्होंने ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिवस को उत्सव और त्योहार का अवसर नहीं बनाया, यदि यह वैध और धर्म संगत (नेकी का काम) होता तो वे लोग इसे न छोड़ते।

2. इस बात से हुज्जत पकड़ना कि बहुत से देशों में अधिकांश लोगों का यही अमल है।

इस का उत्तर यह है कि : हुज्जत और प्रमाण उस चीज़ के अन्दर है जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित (प्रमाणित) है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित (साबित) यह है कि आप ने सामान्य रूप से बिद्अतों (धर्म में नवाचार) से मना किया है, और यह भी उन्हीं (बिद्अतों) में से एक है।

और लोगों का अमल अगर दलील के खिलाफ हो तो वह हुज्जत और तर्क नहीं बन सकता, भले ही अधिकतर लोग उसी के समर्थक हों, (जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है:)

﴿وَإِنْ تُطِيعُوا أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ لَيُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ﴾ [الأنعام: 116]

“और अगर आप धरती पर बसने वालों की बहुमत की बात मानेंगे तो वे आप को अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे।” (सूरतुल अंआम : 116)

जब कि अल्लाह की प्रशंसा और गुणगान है कि हर ज़माने में ऐसे लोग निरंतर मौजूद रहे हैं जो इस बिद्अत का खण्डन करते रहे हैं और इस

की व्यर्थता को स्पष्ट करते रहे हैं, अतः हक (सच्चाई) स्पष्ट हो जाने के बाद जो इस बिद्अत को मनाने पर निरंतर जमा रहा उस के अमल में कोई हुज्जत और तर्क नहीं है।

इस अवसर पर समारोह आयोजित करने और उत्सव मनाने का जिन लोगों ने खण्डन किया है उन में शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या अपनी किताब “इक्तिजाउस्सिरातिल मुस्तकीम” में, इमाम शातिबी अपनी किताब “अल-एतिसाम” में और इब्नुल हाज्ज अपनी किताब “अल मदख़ल” में हैं, तथा शैख ताजुद्दीन अली बिन उमर अल्लखमी ने इस के खण्डन में अलग से एक किताब ही लिखी है, और शैख मुहम्मद बिन बशीर सहसवानी भारतीय ने अपनी किताब “सियानतुल इन्सान” में इस का खण्डन किया है, तथा सैयद मुहम्मद रशीद रज़ा ने इस बाबत एक विशिष्ट पत्रिका लिखी है, और शैख मुहम्मद बिन इब्राहीम आलुशशैख ने भी इस के बारे में एक विशिष्ट पत्रिका लिखी है, तथा समाहतुशशैख इब्ने बाज़ ने भी इसका खण्डन किया है, इन के अतिरिक्त अन्य लोग भी हैं जो हर साल इस बिद्अत के खण्डन में पत्रिकाओं और मैगज़ीनों के पन्नों में बराबर उस समय लिखते रहते हैं जिस समय इस बिद्अत को आयोजित किया जाता है।

3. वे लोग कहते हैं कि : मीलाद का समारोह आयोजित करने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यादगार को ज़िन्दा और ताज़ा करना है।

इस के उत्तर में हम कहेंगे कि : जब भी मुसलमान अज़ान व इक़ामत और खुत्बां (भाषणों) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लेता है तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्मरण मुसलमान के साथ नवीन होता रहता है और वह मुसलमान के साथ संबंधित और जुड़ा हुआ रहता है, इसी तरह जब भी मुसलमान वुजू के बाद और नमाज़ों में शहादतैन को

दोहरात है, और जब भी वह नमाज़ों में और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम आने पर दुरुद पढ़ता है, तथा जब भी मुसलमान कोई अनिवार्य या ऐच्छिक (वाजिब या मुसतहब) नेक कार्य करता है जिसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने धर्म संगत करार दिया है तो वह इस के द्वारा आप को याद करता है, और आप को भी उतना ही पुण्य और अज़्र व सवाब पहुँचता है जितना कि अमल करने वाले को मिलता है ... इस तरह मुसलमान सदैव रसूल के यादगार को नवीन और ताज़ा करता रहता है और अपने जीवन भर रात दिन अल्लाह तआला के बताये हुए तरीक़े के अनुसार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंधित और जुड़ा हुआ रहता है, केवल मीलाद के दिन और ऐसी चीज़ के द्वारा नहीं जो बिद्अत और आप की सुन्नत के विरुद्ध है, क्योंकि ऐसा करना तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दूर और आप से अलग थलग (बरी) कर देता है।

वास्तविकता तो यह है कि नबी सल्लल्लाहु लअैहि व सल्लम इस तरह के अविष्कारित समारोह और स्मरण उत्सव से, उस आदर व सम्मान और ताज़ीम के द्वारा बेनियाज़ हैं जिसे अल्लाह तआला ने आप के लिए निर्धारित कर दिया है (धर्म संगत ठहराया है) जैसाकि अल्लाह तआला के इस फरमान में है : “ और हम ने आप का ज़िक्र (चर्चा) ऊँचा कर दिया है।” (सूरतुश शर्ह : 4)

चुनाँचि अज़ान, इक़ामत और खुल्बा में जहाँ सर्व शक्तिमान अल्लाह का स्मरण किया जाता है वहीं उस के बाद ही रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी स्मरण किया जाता है, और यह प्रतिष्ठा आप के आदर व सम्मान, महब्बत, और आप के ज़िक्र का नवीन करने और आप के अनुसरण पर प्रोत्साहित करने के लिए काफी है।

तथा यह बात भी विचार के योग्य है कि अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने पवित्र कुरआन में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म का उल्लेख और चर्चा नहीं किया है, बल्कि आप के संदेष्टा बनाये जाने का उल्लेख और चर्चा किया है, अल्लाह तआला ने फरमाया : “अल्लाह तआला ने मोमिनोँ पर बड़ा उपकार किया है कि उन्हीं में से उन के मध्य एक पैग़म्बर भेजा जो उन पर अल्लाह तआला की आयतें तिलावत करता, उन्हें पाक करता और उन्हें किताब और हिक्मत की शिक्षा देता है, अगरचे वे इस से पहले स्पष्ट पथ-भ्रष्टता (गुमराही) में थे।” (सूरत आल इम्रान: 164)

तथा एक दूसरे स्थान पर फरमाया : “वही (अल्लाह) है जिस ने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा।” (सूरतुल जुमा : 2)

4. कभी कभार वे कहते हैं कि : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म का स्मरण उत्सव मनाने का अविश्कार एक इन्साफ पसन्द विद्वान बादशाह ने किया है जिस का उद्देश्य अल्लाह का तकर्बुब (निकटता) हासिल करना है !

इस का उत्तर यह है कि : बिद्अत को किसी भी व्यक्ति से स्वीकार नहीं किया जा सकता, और मक्सद का अच्छा होना किसी बुरे काम को वैध नहीं ठहरा सकता है, और उस के विद्वान और इन्साफ पसन्द होने का मतलब यह नहीं होता है कि वह ग़लतियों से मा'सूम (पाक व पवित्र) था।

5. उन का यह भी कहना है कि : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन के अवसर पर समारोह का आयोजित करना एक अच्छी बिद्अत है; क्योंकि इस से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्तित्व पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने का प्रदर्शन होता है!

इसका उत्तर यह दिया जाये गा कि : बिद्अतों में से कोई भी चीज़ अच्छी नहीं है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : **“जिस ने हमारी इस शरीअत में कोई ऐसी चीज़ अविष्कार की जिस का उस से कोई संबंध नहीं है तो उसे रद्द (अस्वीकृत) कर दिया जायेगा।”** (सहीह बुखारी 3/167 हदीस संख्या : 2967, फत्हुल बारी 5/355)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **“हर बिद्अत गुमराही है।”** (मुस्नद अहमद 4/126, तिर्मिज़ी हदीस संख्या : 2576)

इस हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर बिद्अत को गुमराही कहा है, और यह कहता है कि : हर बिद्अत गुमराही नहीं है बल्कि कोई बिद्अत ऐसी भी है जो अच्छी है।

हाफिज इब्ने रजब अपनी किताब “शर्हुल अरबईन” (चालीस हदीसों की व्याख्या) में कहते हैं कि : (आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान कि : **“हर बिद्अत गुमराही है।”** जवामिउल कलिम में से है, उस से कोई चीज़ बाहर नहीं हो सकती है, तथा वह धर्म के मूल सिद्धान्तों में से एक महान सिद्धान्त है, तथा वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन : **“जिस ने हमारी इस शरीअत में कोई ऐसी चीज़ अविष्कार की जिस का उस से कोई संबंध नहीं है तो उसे रद्द (अस्वीकृत) कर दिया जायेगा।”** (सहीह बुखारी 3/167 हदीस संख्या : 2967, फत्हुल बारी 5/355) के समान है, अतः जिस ने भी कोई नई चीज़ निकाली (ईजाद की) और उसे धर्म से संबंधित कर दिया और उस के लिए धर्म में कोई असल (सिद्धान्त) नहीं है जिस की तरफ उसे लौटाये जा सके (यानी उस का आधार बन सके) तो वह गुमराही और पथ भ्रष्टता है और धर्म उस से बरी और अलग थलग है, तथा इस में अकीदे (विश्वास) के मसाईल, या जाहिरी और

बातिनी कथन या कर्म सभी बराबर हैं।) जामिउल उलूम वल हिकम पृ. 233 से समाप्त हुआ।

इन लोगों के पास इस बात पर कि कोई बिद्अत अच्छी भी है, इस के सिवाय कोई और हुज्जत नहीं है कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तरावीह की नमाज़ के बारे में फरमाया : **“यह कितनी अच्छी बिद्अत है।”** (सहीह बुखारी 2/252 हदीस संख्या : 2010 तालीक के साथ, फतहुल बारी 4/294)

तथा वे लोग यह भी कहते हैं कि : कुछ ऐसी चीज़ें नई अविष्कार की गई हैं जिन का सलफ सालिहीन ने खण्डन नहीं किया है जैसे कि : कुरआन करीम को एक पुस्तक में एकत्र (संग्रह) करना, तथा हदीस का लेखन और संकलन।

इस का उत्तर यह है कि इन चीज़ों की शरीअत में एक असल और आधार मौजूद है, इसलिए ये नई अविष्कार नहीं की गयी हैं (अर्थात इन्हें बिद्अत नहीं कहा जायेगा)।

तथा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के कथन कि : (क्या ही अच्छी बिद्अत है।) का अभिप्राय : भाषाई अर्थ में बिद्अत (नवाचार) है, शरई अर्थ में बिद्अत (नवाचार) नहीं है, जिस चीज़ की शरीअत में कोई असल और आधार हो जिस की तरफ वह पलटती हो जब उस के बारे में यह कहा जाये कि : वह बिद्अत है, तो वह भाषा (शब्दकोष) से संबंधित बिद्अत है शरीअत की शब्दावली में बिद्अत नहीं है, क्योंकि शरीअत के अंदर बिद्अत उसे कहते हैं जिस का शरीअत में कोई आधार और असल न हो जिस की तरफ वह पलटता हो।

तथा कुरआन को एक किताब में संग्रह करने का शरीअत में आधार और असल मौजूद है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुरआन को लिखने का आदेश देते थे, किन्तु वह अलग अलग (छिटपुट) लिखा हुआ था, तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उसे उस की सुरक्षा के लिए एक किताब में एकत्र (संग्रह) कर दिया।

तथा तरावीह की नमाज़ को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा को कुछ रातें पढ़ाई हैं, फिर आप ने अंत में इस डर से उसे छोड़ दिया कि कहीं उन पर अनिवार्य न कर दी जाये, लेकिन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन के दौरान और आप की मृत्यु के बाद उसे अलग अलग पढ़ते रहे, यहाँ तक कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें एक इमाम के पीछे एकत्र कर दिया जिस तरह कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे (तरावीह की नमाज़ पढ़ते) थे, और यह धर्म में एक बिद्अत (नयी पैदा की गई चीज़) नहीं है।

तथा हदीस के लिखने का भी शरीअत में एक असल और आधार मौजूद है, चुनाँचि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने कुछ सहाबा के हदीस को लिखने की मांग करने पर कुछ हदीसों को लिखने का आदेश दिया, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में उस का सामान्य रूप से लिखना इस डर से निषिद्ध था कि कहीं कुरआन के साथ ऐसी चीज़ न मिल जाये जो उस का हिस्सा नहीं है, लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु हो गयी तो यह निषेद्ध समाप्त हो गया, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु से पहले ही कुरआन संपूर्ण हो गया था और उसे नियंत्रित कर लिया गया था, फिर इस के बाद मुसलमानों ने सुन्नत के नष्ट होने के डर से उस का संकलन किया, अतः अल्लाह तआला उन्हें इस्लाम और मुसलमानों की तरफ से

अच्छा बदला दे कि उन्होंने ने अपने पालनहार की किताब और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को नष्ट होने और छेड़छाड़ और खुर्द बुर्द करने वालों के छेड़छाड़ से सुरक्षित कर दिया।

तथा उन से यह भी कहा जायेगा कि : तुम्हारे भ्रम के अनुसार इस शुक्र को अदा करने में छठी शताब्दी हिजरी तक क्यों विलंब किया गया, चुनाँचि सहाबा, ताबेईन और उनके बाद आने वाले लोगों ने जो कि सर्वश्रेष्ठ ज़माने के लोग हैं, इस मीलाद समारोह का आयोजन नहीं किया, जबकि वे लोग भलाई के काम पर और शुक्र की अदायगी के बड़े इच्छुक और लालायित थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अत्यन्त महब्त करने वाले थे, तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि जिन्होंने ने मीलाद की बिद्अत ईजाद की है ये उन (सहाबा व ताबेईन) से अधिक हिदायत याफता और उन से अधिक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का शुक्र अदा करने वाले थे? कभी नहीं और कदापि नहीं।

6. उन का यह कथन भी है कि : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन का स्मरणोत्सव मनाना आप की महब्त का सूचक है, इस प्रकार यह आप की महब्त का एक प्रदर्शन है और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्त का प्रदर्शन करना वैध (मश्रूअ) है !

इसके उत्तर में हम कहें गे कि : इस में कोई शक नहीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्त हर मुसलमान पर उस की जान, बाल-बच्चों, मात-पिता और समस्त लोगों की महब्त से कहीं बढ़कर अनिवार्य है, लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि हम इस में कोई ऐसी चीज़ गढ़ लें जो हमारे लिए वैध नहीं है, बल्कि आप की महब्त का तकाज़ा यह है कि आप का आज्ञा पालन और अनुसरण किया जाए,

क्योंकि यह आप की महबूत का सबसे महान प्रदर्शन है, जैसाकि कहा गया है :

अगर तुम्हारी महबूत सच्ची होती, तो तुम अवश्य उस की पैरवी करते।

क्योंकि महबूत करने वाला अपने महबूब की पैरवी करने वाला होता है।

अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महबूत वास्तव में आप की सुन्नत को ज़िन्दा करना, उसे मज़बूती से थामे रहना, और उस के विरुद्ध सभी बातों और कामों से दूर रहना है, और इस में कोई सन्देह नहीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के खिलाफ हर चीज़ एक घृणित बिद्अत और प्रत्यक्ष अवज्ञा है, और इसी में से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिवस का यादगार मनाना भी है, क्योंकि यह बिद्अतों में से है।

और आदमी की नीयत का अच्छा होना दीन में बिद्अत ईजाद करने को वैध नहीं ठहरा सकता; क्योंकि दीन दो सिद्धांतों पर आधारित है : इख़लास और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी। अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا

﴿ هُمْ يَحْزَنُونَ ﴾ [البقرة: ١٢]

“सुनो! जिस ने अपने चेहरे को अल्लाह के सामने झुका दिया (आज्ञा पालन किया) और वह नेक कार्य करने वाला (भी) है, तो उसी के लिए उस के रब के पास अज़्र (पुण्य) है, और उन पर न कोई डर होगा और न वे लोग शोक ग्रस्त होंगे।” (सूरतुल बकरा : 112)

चेहरे को झुकाने का मतलब अल्लाह के लिए इख़लास अपनाना, और एहसान का मतलब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी और आप की सुन्नत का इत्तिबा करना है।

7. तथा उन के सन्देशों में से यह भी है कि वे कहते हैं कि : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन का यादगार मनाने और इस अवसर पर आप की जीवनी (सीरत) पढ़ने में लोगों को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने और आप का आदर्श अपनाने पर प्रोत्साहित करना है !

इस के उत्तर में हम उन से कहेंगे कि : पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत (जीवनी) को पढ़ना, आप का अनुसरण करना और आप के आदर्श को अपनाना मुसलमान के लिए हर समय पूरे वर्ष और जीवन भर आवश्यक है, किन्तु उस के लिए बिना किसी प्रमाण के एक दिन विशिष्ट कर लेना बिद्अत है और **“हर बिद्अत गुमराही है।”** (मुसनद अहमद 4/1164, तिर्मिजी हदीस संख्या : 2676)

तथा बिद्अत मात्र बुराई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दूरी ही को जन्म देती है।

सारांश यह है कि : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल के जन्म दिवस का स्मरणोत्सव मनाने की सभी किस्में और शकलें एक घृणित बिद्अत हैं, मुसलमानों पर अनिवार्य है कि वे इस बिद्अत से और इस के अलावा अन्य बिद्अतों से लोगों को रोकें, और सुन्नतों को जीवित करने और उन पर दृढ़ता से जम जाने में व्यस्त हों, तथा इस बिद्अत का प्रसार व प्रचार करने और इस का समर्थन करने वालों से धोखा न खायें ; क्योंकि ये लोग सुन्नतों को ज़िन्दा करने से अधिक ध्यान बिद्अतों को ज़िन्दा करने पर देते हैं, बल्कि कभी-कभार सुन्नतों पर बिल्कुल ही ध्यान नहीं देते, और

जिस आदमी का यह हाल हो उस की तक्लीद करना और उसके पीछे चलना जाईज नहीं है, भले ही इस वर्ग के लोग ही अधिक संख्या और बहुमत में हों, बल्कि केवल सुन्नत के मार्ग पर चलने वाले सलफ सालेहीन (इस्लाम के प्राथमिक शताब्दियों के सदाचारी पूर्वज) और उन का अनुसरण करने वालों की पैरवी की जाये गी, चाहे उन की संख्या थोड़ी ही क्यों न हो ; क्योंकि हक की पहचान लोगों के द्वारा नहीं होती है बल्कि लोग हक के द्वारा पहचाने जाते हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है :

“तुम में से जो आदमी मेरे बाद जिन्दा रहे गा वह बहुत अधिक इख़िलाफ (मतभेद) देखे गा, अतः तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत याफ़ता (पथप्रदर्शित) खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को दृढ़ता से थाम लो और उसे दाँतों से जकड़ लो। तथा धर्म में नयी ईजाद कर ली गयी चीज़ों (यानी बिदअतों) से बचो, क्योंकि हर बिदअत गुमराही (पथ भ्रष्टता) है।”
(मुसनद अहमद 4/126, तिर्मिज़ी हदीस संख्या : 2676)

इस हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिए यह स्पष्ट कर दिया है कि हम मतभेद के समय किस की बात मानें और परैवी करें, तथा यह भी स्पष्ट कर दिया कि सुन्नत के खिलाफ हर काम और कथन बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।

और जब हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिवस का जश्न मनाने का विश्लेषण करते हैं तो हम रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत में, या खुलफाये राशिदीन की सुन्नत में कोई आधार नहीं पाते हैं, इसलिए वह नई अविष्कार कर ली गई चीज़ों में से और गुमराह करने वाली बिदअतों में से है, और यह असल (सिद्धांत) जिस पर यह हदीस आधारित है, इस पर अल्लाह तआला का यह फरमान दलालत करता है :

“यदि तुम किसी चीज़ के बारे में मतभेद कर बैठो तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ लौटाओ, यदि तुम अल्लाह तआला और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो, यह बेहतर और परिणाम के एतिबार से बहुत अच्छा है।” (सूरतुन्निसा : 59)

अल्लाह की तरफ लौटाने का मतलब उस की पवित्र किताब की ओर लौटाना, और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ लौटाने का मतलब आप की मृत्यु के बाद आप की सुन्नत की तरफ लौटाना है, अतः मतभेद उत्पन्न होने के समय किताब और सुन्नत ही दो संदर्भ हैं, तो बतलायें कि किताब और सुन्नत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म दिन का उत्सव मनाने की वैधता का प्रमाण कहाँ है ? इसलिए इस को मनाने वाले या इसे अच्छा समझने वाले पर अनिवार्य है कि इस से और इस के अलावा अन्य बिदअतों से अल्लाह के सामने तौबा (पश्चाताप) करे, क्योंकि सत्य के खोजी और हक के मतलाशी मोमिन का यही रवैया होता है, किन्तु जो व्यक्ति हुज्जत कायम हो जाने के बाद हठ (जिद्दीपन) और अभिमान का रवैया अपनाता है तो उस का हिसाब उस के प्रभु के पास होगा।

देखिये : किताब हुकूक़ुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैनल इजलाल वल इस्लाल पृ. 147 – 157

शैख डॉक्टर सालेह बिन फौज़ान अल फौज़ान

सऊदी अरब में वरिष्ठ विद्वानों की समिति के सदस्य